Vol. 10, Issue-1 (January 2021) pp. 83- 87 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

सितार के अविष्कारक अमीर खुसरो ? एक विवेचनात्मक अध्ययन

कृष्णा बाला सिंह
अस्सिटेंट प्रोफेसर
बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय,
आगरा, उत्तर प्रदेश
Email: krishana.ad06@gmail.com

सारांश

भारतीय वाद्य यंत्रों में सितार का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय का यह सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा सर्वगुण सम्पन्न तत वाद्य है। लगभग सभी प्रकार के वस्तुओं के उत्पन्न होने एवं उनके विकास के समबन्ध में प्रायः मतभेद पाया जाता रहा है। इन मतभेदों में कुछ मतभेद तो तार्किक होते हैं तथा उनका एक मजबूत आधार होता है जबकि अन्य मतभेद पूर्णरूप से अतार्किक होते हैं। कुछ ऐसी अतार्किक ओर निराधार विचारधाराएं भी होती हैं जिनका समाज पर काफी गहरा प्रभाव होता है एवं उनको प्रभावहीन बनाने के लिए बहुत अधिक प्रयत्न और समय लगाना पड़ता है। सितार के अविष्कार का इतिहास भी कुछ इसी तरह का है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस तथ्य का तर्कपूर्ण विवेचना करने का प्रयत्न किया गया है कि अमीर खुसरो ने सितार का अविष्कार किया अथवा नही।

मुख्य बिन्दु:- सितार, अविष्कार, वाद्ययंत्र, अमीर खुसरो।

सितार वर्तमान समय का लोकप्रिय तंत्री वाद्य है। आज के समय में सितार का प्रचलन अन्य 'तंत्री वाद्यों' से अधिक है। अब यह तंत्री वाद्य क्या है? तो हमारे भारतीय संगीत में वाद्यो के चार प्रकार के वर्गीकरण देखने को मिलते हैं जो निम्न श्लोक द्वारा स्पष्ट हो जाता है -

''तत वीणादिंक वाद्यं आनद्धं मुरजादिकम्।
वंशादिंक तु शुषिरं कास्यतालादिकं घनम्।।''

('अमरकोश' प्र0 कांड नाट्यवर्ग 8)

अर्थात् 'वीणादि' वाद्यों को 'तत वाद्य', मुरज (मृदंग) आदि को 'आनद्ध वाद्य', वंश, वेणु आदि को 'शुषिर वाद्य' और कास्यताल आदि को 'घन वाद्य' कहा जाता है।

इस प्रकार सितार वाद्य को 'तत वाद्य' की श्रेणी में रखा गया है। 'तत' शब्द तनु धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है 'विस्तार करना'। उणादि सूत्र 'तनिमृङ्भ्याकिंच्च से 'तनु' धातु में 'त' प्रत्यय लगाकर 'ततम' शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है- जो व्याप्त और विस्तृत हो जिसमें स्वर व्याप्त हो और उसका विस्तार किया

जाय। इस व्याख्या से 'तत्म' शब्द 'वीणा', रावणहस्त..... अपने तारों या तंतुओं में व्याप्त स्वर का विस्तार करने वाले वाद्यों के लिए यथार्थ ही प्रयुक्त होता है।"[1]

सितार तंत्री वाद्य के अविष्कार के बारे में जो मत अत्यधिक प्रचलित है उसके अनुसार 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो, जो कि अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतज्ञ थे, ने इस वाद्य का निर्माण किया। इस मत के समर्थन में यह तर्क दिया जाता है कि सितार का प्रारम्भिक नाम सेहतार रखा गया। फारसी भाषा में 'सह' का अर्थ 'तीन' होता है | पहले इस वाद्य में तीन तारों का प्रयोग किया जाता था परन्तु आवश्यकता पड़ने पर गुणीजनों के द्वारा इसके तारों में वृद्धि की गयी और इस प्रकार सितार की उत्पत्ति हुई। वर्तमान समय में सितार की जो पुस्तकें

उपलब्ध हैं उनमें अधिकांशतः यही मत प्राप्त होता है। अधिकतर लेखकों का यह मानना है कि सितार का अविष्कार अमीर खुसरो ने किया।

सुदर्शनाचार्य शास्त्री ने अमीर खुसरो को ही सितार का अविष्कारक मानते हुए लिखा है, ''सितार को अमीर खुसरो फकीर ने निकाला और उस पर तीन तार चढ़ाए, इसी कारण इसका नाम 'सहतार' रखा। फारसी में सह नाम तीन का है। अमरी खुसरो के पीर की सिद्धि किसी फकीर ने चिढ़कर छीन ली थी, उस फकीर को प्रसन्न कर अपने पीर की सिद्धि को लौटा लाने के लिए ही अमीर खुसरो ने सितार वाद्य को निकाला।''[2]

सुदर्शनाचार्य जी के इस मत का खण्डन स्वयं हजरत अमीर खुसरों के द्वारा दी गयी वाद्यों की सूची से हो जाता है। ''अमीर खुसरो ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'एजाजे खुसरवी' के दूसरे रिसाले में तत्कालीन 26 वाद्यों की चर्चा की है। जैसे- दमामा, चंग, अजबरोद, कानून जनान, ढोले जनान, चेहरा बाज, दफ, नाय, मसके कसक, दस्तनाद, दस्तक, तम्बूर, दस्तान, बावलक, शहनाई, बाबगग, दम, सरकी, ढोलेक जनान, गाजी रबाब, ऊद ,नवालक, कगरा, तबीरा-ए-हिन्द।''[3]

उपरोक्त 26 वाद्यों में सेहतार की चर्चा नहीं है जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि 'सेहतार' वाद्य न हजरत अमीर खुसरो के समय का प्रचलित वाद्य था और न ही अमीर खुसरो का अविष्कार था। अन्यथा अमीर खुसरो इसकी चर्चा अपने वाद्यों की सूची में अवश्य करते।

कैप्टन विलर्ड अपनी पुस्तक 'म्यूजिक ऑफ हिन्दुस्तान' जो सन् 1838 में लिखी गयी, में सितार के सम्बन्ध में लिखते हैं -

This is like wise a modern instrument and was invented by Umeer Khusro of Delhi. It resembles the last mentioned instrument, but it made a good deal smaller, and has a movable frets of silver brass or other material which are fastened with catgut or silk, seventeen frets

[1] संगीत (वाद्य-वादन अंक) जनवरी- फरवरी- 1975, बालकृष्ण गर्ग, मुकेश गर्ग - पृष्ठ सं0 22

[2] मुश्ताक अली खां व्यक्तित्व एवं कृतित्व - अलका नागपाल, पृष्ठ सं0 7

[3] सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज का विकास क्रम - रेखा निगम, पृष्ठ सं0 24

are generally used, and as they are movable, they answer every purpose required. The shifting of these to their proper places requires a delicate ear.

This instrument derives its name from 'S1' signifying in Persian there, and tar a string, as that number is commonly used. There modern performers have made several additions. The wire are struck with the fore-finger of the right, to which is fitted a kind of plectrum or instrument called a mizrab, (from the Arabic verb to strike) made of piece of wire curiously twisted to facilitate the various motion of the finger.

कैप्टन विलर्ड के उक्त कथन में कई त्रुटियाँ हैं जिनका कारण उन्हें प्राप्त विभिन्न प्रकार की गलत सूचनाएं हो सकती हैं। यहाँ उनके समग्र कथन पर ध्यान न देते हुए केवल दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक है, पहला सितार को उन्होंने उस समय (1838) का आधुनिक वाद्य कहा है। इसका मुख्य कारण यही था कि उस समय तक सितार के परम्परागत घरानों का विकास प्रारम्भ ही हुआ था, अतः वीणा तथा रबाब आदि के परम्परायुक्त घरानेदार वादकों के लिए यह वाद्य नया ही था । दूसरी महत्वपूर्ण बात जो उन्होंने कही कि सितार का अविष्कार अमीर खुसरो ने किया ‘‘उस समय (1838) के कुछ पूर्व ही मसीत खां ने सितारवादन की एक विशेष शैली का अविष्कार किया था जिसे उस समय से ही मसीतखानी कहा जाने लगा था। दिल्ली में मसीत खां तथा लखनऊ में गुलाम रजा खां ने अपने निरन्तर, परिश्रम तथा कठिन अभ्यास से सितार को बीन तथा रबाब के जोड़ में लाकर खड़ा कर दिया। यद्यपि यह वाद्य तानसेन के वंशजो द्वारा अंगीकार नहीं किया किन्तु सेनियों द्वारा इसकी शिक्षा अवश्य दी गई। इसके प्रचार का श्रेय मुसलमानों को ही है। अतएव जब इसकी उत्पत्ति की बात की जाती है तो इसका सम्बनध किसी मुस्लिम विद्वान से जोड़ना ही उन्हें स्वीकार्य था। अतः सितार की उत्पत्ति की गहराई में न पड़कर उन्होनें अमीर खुसरो का नाम लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें यह आशा नहीं थी कि कोई इस बात की छानबीन करेगा कि वास्तव में इसे अमीर खुसरो ने बनाया अथवा नहीं? इस भ्रमात्मक प्रचार का मूल आधार सितार का नाम है।’’[4]

विलायत हुसैन खां जो कि आगरा घराने में ख्याति प्राप्त गायक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक ‘संगीतज्ञों के संस्मरण में’ अमीर खुसरो के विषय में लिखा है कि अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तानी संगीत में कई नई चीजें जोड़ी। इनके बनाए हुए राग सरपर्दा, जीलफ, एमन गारा, बहार अब तक सबको पसंद आते हैं । वाद्यों में सबसे बड़ी ईजाद है सितार! इस साज की प्रभावोत्पादकता और प्रसिद्धि के बारे में कुछ भी कहना आवश्यक नहीं। हिन्दुस्तान के कोने-कोने में उसका प्रचार इस बात का सबसे बड़ा सबूत है।’’[5]

इसी क्रम में श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ने भी अपनी पुस्तक में लिखा है कि संगीत को आधुनिक रूप देने में अमीर खुसरो का बहुत हाथ रहा है । संगीत जगत में अमीर खुसरो को भुलाया नहीं जा सकता। ‘‘अमीर खुसरों ने तत्कालीन जनरुचि का अध्ययन किया और उसके अनुकूल नए-नए वाद्यों की रचना की। इतना ही नहीं, आधुनिक

[4] भारतीय संगीत वाद्य- लालमणि मिश्र, पृष्ठ सं0 123
[5] संगीतज्ञों के संसमरण- विलायत हुसैन खां, पृष्ठ सं0 45

काल का लोकप्रिय गीत छोटा ख्याल को जन्म देने का श्रेय उन्हीं को प्राप्त होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार उन्होंने छोटा ख्याल, कब्बाली, तराना तीनों का अविष्कार किया। उन्होंने वाद्यों की भी रचना की। कहा जाता है कि उसने दक्षिणी वीणा पर चार तार के स्थान पर तीन तार लगाए और 'सेहतार' की संज्ञा दी। सेहतार धीरे-धीरे सितार हो गया। इन्हें तबले का रचयिता भी माना जाता है। इसके लिए यह कहा जाता है कि उन्होंने पखावज को बीच से काटकर तबले की रचना की।''[6]

संगीत जगत में प्रचलित कौल, कलवाना, कब्बाली, नख्श व गुल, बसीत, तराना तथा ख्याल आदि गायन विधाएं व सितार, तबला, ढोलक आदि प्रचलित अनेक तालों को यदि मुसलमानों द्वारा विकसित कहा जाय तो ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसा कहना किसी हद तक संभव हो सकता है। परन्तु उपरोक्त समस्त गायन विधाएं एवं सितार, तबला, ढोलक और अनेक तालों का अविष्कार या विकास किसी एक ही व्यक्ति के द्वारा हुआ ऐसा मानना ऐतिहासिक दृष्टि से अनुचित प्रतीत होता है।''[7]

श्री उमेश जोशी जी भी अमीर खुसरो को सितार का अविष्कारक मानते हुए लिखते हैं कि ''खुसरो को दक्षिणी वीणा पसंद नहीं आयी, उसमें चार तार होते थे, खुसरो ने उसके स्थान पर तीन तार किए थे तथा तारों का क्रम उलट दिया और चल पर्दे लगा दिये। इसमें तीन तार होने के कारण खुसरो ने इसका फारसी नाम 'सेहतार रखा। इसके अतिरिक्त द्रुत लय में वादन को सहज करने के लिए इसकी गतें स्थिर की और इन्हें ताल में निबद्ध किया। इससे वीणा की अपेक्षा यह वाद्य अधिक लोकप्रिय हो गया। इस प्रकार तीन तार वाले वाद्य सेहतार का रूप बदलते-बदलते आज का सितार बन गया। अतएव अमीर खुसरो प्रचलित वर्तमान सितार के जन्मदाता माने जाते है।'' [8]

बड़े ही दुख की बात है कि जोशी जी ने इसी पुस्तक के पृष्ठ सं0 144-145 पर समुद्रगुप्त काल में सितार के विकास होने की बात स्वीकार्य की है और पृष्ठ संख्या 187 पर अमीर खुसरो को सितार का अविष्कारक माना है।

श्री उमेश जोशी जी के कथनों से ऐसा लगता है कि उन्होंने जैसा सुना या पढ़ा ठीक वैसा ही लिख दिया। अगर जोशी जी अमीर खुसरों की पुस्तक 'एजाजे खुसरवी' का ही केवल अध्ययन किये होते तो जोशी जी स्वतः इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते थे कि जब अमीर खसुरो ने ही अपनी पुस्तक में 'सेहतार' या 'सितार' का वर्णन नहीं किया है तो उनके मरने के कई सालों बाद खुसरों को सितार का अविष्कारक मानना न्यायोचित है अथवा नहीं, क्योंकि खुसरो ने अपनी पुस्तक 'एजाजे खुसरवी' में उन सभी वाद्यों का वर्णन किया है जो उस समय प्रचलन में थे।

[6] हमारे प्रिय संगीतज्ञ- प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ 15

[7] सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन- रेखा निगम, पृष्ठ – 30

[8] भारतीय संगीत का इतिहास - उमेश जोशी, तृतीय संस्करण, पृष्ठ -187

निष्कर्ष:

अमीर खुसरो के बारे में लिखने वालों ने केवल किंवदन्तियों और उनसे पूर्व की पुस्तकों में वर्णित सामग्री के आधार पर अमीर खुसरो के अविष्कारों तथा कार्यो का वर्णन किया, जिससे बिना किसी ठोस तथा ऐतिहासिक प्रमाण के अनेक अविष्कार खुसरो के नाम से संगीत जगत में फैलते गये।

उर्दू और फारसी की जो पुस्तकें खुसरो की मृत्यु से लेकर 200 वर्ष के मध्य लिखी गई, उनमें केवल जनश्रुति और काल्पनिक कथाओं के आधार पर वर्णन प्रस्तुत किये गये हैं जिससे फारसी तथा उर्दू समाज खुसरो से सम्बद्ध अविष्कारों को सत्य मानने लगा। उस समय इस बात को जानने की जिज्ञासा नहीं थी कि संगीत जगत को किसके प्रयास से क्या लाभ हुआ या संगीत को लोकप्रिय बनाने में किसका योगदान अधिक है या किन विधाओं

और वाद्यों को नवीन रूप में कौन विकसित करने का प्रयास कर रहा है इत्यादि। प्रामाणिक एवं सही तथ्य जानने के लिए खोज करना जरूरी नहीं समझते थे। लोग किंवदन्तियों को ही सत्य मान लेते थे। किंवदन्तियों व काल्पनिक कथाओं और अप्रमाणिक तथ्यों के प्रचार को इसी उदासीनता ने जन्म दिया और कलाकारों से लेकर प्रतिष्ठित लेखक और इतिहासकार एक लम्बे समय तक बिना किसी ठोस प्रमाण के त्रुटिवश अमीर खुसरो को ही सितार का आविष्कारक मानते रहे। यहाँ इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि अमीर खुसरो ने अपने ही द्वारा लिखित पुस्तक 'एजाजे खुशरवी' मे अपने समय के 26 वाद्यों की चर्चा की है, किंतु उन वाद्यों में सेहतार या सितार की चर्चा नहीं है। यदि अमीर खुसरो ने सेहतार या सितार का आविष्कार किया होता या सितार उनके समय का वाद्य होता तो वह इसकी चर्चा उन 26 वाद्यों की सूची में अवश्य करते। अमीर खुसरो के काल के प्रसिध्द इतिहासकार बरनी ने अपने साहित्य में उस समय के दरबारी संगीत की चर्चा की है तथा कई वाद्यों का उल्लेख किया है, पर उन वाद्यों में कहीं भी सितार वाद्य की चर्चा नहीं की। अमीर खुसरो के बाद मुगल कालीन इतिहास की पुस्तक आईने अकबरी मे अनेक वाद्यों का वर्णन है जैसे सारंगी, वीणा इत्यादि, किंतु सितार का कहीं भी वर्णन नहीं है। यहाँ तक कि सत्रहवी शताब्दी तक के लिखे गए किसी भी ऐतिहासिक ग्रंथ में सितार या सेहतार के नाम का जिक्र तक नहीं मिलता। अठारहवी शताब्दी में लिखी गई नवाब 'दरगाह कुली खान' की 'मीराते दिल्ली' में तीन तार वाले सेहतार का प्रथम उल्लेख है। अतः यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है कि ना तो सितार अथवा सेहतार अमीर खुसरो के समय का वाद्य था और ना ही अमीर खुसरो ने सितार अथवा सेहतार का आविष्कार किया था।

सन्दर्भ -

1. रेखा निगम. *सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज का विकास क्रम*. प्रथम संस्करण, दिल्ली: मानक पब्लिकेशन्स, 1996
2. लालमणि मिश्र. *भारतीय संगीत वाद्य*. चौथा संस्करण, नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2011
3. बालकृष्ण गर्ग. मुकेश गर्ग. - *संगीत वाद्य-वादन अंक,* जनवरी -फरवरी-1975, संगीत कार्यालय, हाथरस
4. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव. *हमारे प्रिय संगीतज्ञ,* पंचम संस्करण, इलाहाबाद: संगीत सदन प्रकाशन, 2006
5. अलका नागपाल. *मुश्ताक अली खां व्यक्तित्व एवं कृतित्व*. प्रथम संस्करण, दिल्ली: संजय प्रकाशन, 2006